श्री शत्रुंजय - मुक्ति सम्यग्ज्ञान अभ्यासक्रम

शत्रुंजय अेकेडमी श्री पद्मप्रभस्वामी जैन मंदिर, स्टेशन रोड, चालिसगाँव - ४२४१०१

सम्यग्ज्ञान विशारद

अभ्यासक्रम क्रं. :

◆◆◆ अभ्यासक्रम जवाब पत्र ◆◆◆

ऐनरोलमेन्ट नंबर

७

शहर दिसम्बर - 2021

विद्यार्थी का नाम

प्रश्न-१ रिक्त स्थान

(१)	श्री पुष्पिका उपांग
(२)	श्री अदबुद्ध
(३)	ग्यारह
(४)	जिनेश्वर देव
(५)	द्विमाहार
(६)	नंदावर्त
(७)	अनुत्तर
(८)	अेक पल्योपम
(९)	पुण्य शालियों
(१०)	जिनागम
(११)	सातसौ
(१२)	स्थावरो
(१३)	शिवा देवी
(१४)	श्री तंदुल वेयालिय
(१५)	सयोगी
(१६)	दृष्टि वादोपदेशिकी
(१७)	पर्याप्ति
(१८)	श्री वीर
(१९)	जैन शासन → प्रवचन
(२०)	स्त्री वेद

प्रश्न-२ एक ही शब्द में

(१)	कषाय
(२)	बांया
(३)	पीतड़ा नगर में
(४)	दीर्घ कालिकी, दृष्टिवादोपदेशिकी
(५)	अनिवृत्ति
(६)	देशनाना / अनेकोंने
(७)	आगति
(८)	चारित्रनायक-लक्ष्य क्षत्रियप्रतिबोधक
(९)	मोहनीय
(१०)	सिर पर
(११)	श्री दृष्टिवाद सूत्र
(१२)	श्री अंतकृत दशांगसूत्र
(१३)	एकत्व
(१४)	राजसेन परमार
(१५)	सम्यग दर्शनवाले

(५)	वर्षा
(६)	श्री विकलेन्द्रिय
(७)	सचमुच
(८)	रहित
(९)	बताते हैं
(१०)	चार
(११)	दीर्घ
(१२)	जानकार पंडितोंने
(१३)	तत्पर
(१४)	तिर्यंच
(१५)	यह
(१६)	त्रेसठ
(१७)	ऐसा
(१८)	तुम्हारा
(१९)	भोगते हैं
(२०)	हो

प्रश्न-३ शब्दार्थ

(१)	प्राप्त करते हैं
(२)	श्वेत वस्त्र
(३)	भजना
(४)	क्षय करके

प्रश्न-४ जोडियाँ लगाओ

(१)	८	(६)	९
(२)	६	(७)	५
(३)	१०	(८)	३
(४)	६	(९)	२
(५)	१	(१०)	४

प्रश्न-५ संख्या में जवाब

(१)	६
(२)	२४
(३)	१२०२
(४)	१६
(५)	५
(६)	३६३
(७)	५८
(८)	६
(९)	१०२
(१०)	८०

प्रश्न-६ ✓ या ×		प्रश्न-७ यह वाक्य किस पृष्ठ पर	
(१)	✓	(१)	20
(२)	✓	(२)	३
(३)	×	(३)	२४
(४)	✓	(४)	८
(५)	×	(५)	१३
(६)	×	(६)	१०
(७)	×	(७)	६
(८)	×	(८)	१८
(९)	✓	(९)	५
(१०)	✓	(१०)	२९

प्रश्न-१ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-२ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-३ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-४ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-५ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-६ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-७ मिले हुए गुण	+	प्रश्न-८ मिले हुए गुण	=	कुल गुण

रीमार्क ______ जांचनेवाले की सही ______

प्रश्न - ८

१. जिनेश्वर की स्नात्रक्रिया प्रसंग पर विविध प्रकार के नृत्य करते हैं, रत्न और पुष्प की वर्षा करते हैं। अष्टमंगलादि का आलेखन करते हैं तथा मांगलिक स्तोत्र गाते हैं और तीर्थंकरों के वंश, गोत्रों के नाम तथा मंत्र बोलते हैं। स्नात्र क्रिया के पश्चात शांतिकलश करते हैं। केसर, चंदन, कपूर, अगरु का धूप, वास और अंजलि में विविध रंगी पुष्प रखकर बांये हाथ में शांतिकलश ग्रहण करके श्री संघ के साथ स्नात्र मंडल में खडा रहे वह बाह्य-अभ्यंतर शुद्ध होना चाहिये श्वेत वस्त्र चंदन अलंकारों से अलंकृत होना चाहिये। वह पुष्पहार कंठ में धारण कर शांति की उद्घोषणा करने के पश्चात शांति कलश का पानी स्वयं के एवं दूसरों के मस्तीष्क पर लगाये

२. कोरटा में यदुवंशी सोमचंद राज्य करता था। उसके पास ५००० सुभटों की सेना थी जिनकी मदद से वो आसपास लूटपाट करता। उस समय में जयसिंहसूरि ५०० शिष्य सहित उमरकोट से जेसलमेर विहार कर रहे थे। मार्ग में उन्हे सोमचंद मिला उसने जो कुछ भी धनदौलत हो वो सौंप देने को कहा। जयसिंहसूरि ने आनाकानि किये बिना साधुओं के उपकरण धर दिये। इससे सोमचंद आश्चर्यचकित हो गया। जयसिंहसूरी के प्रभाव के बंधन में जकड गया, सूरि का उपदेश सुन उसका मन परिवर्तन हुआ। उसने जैन धर्म का स्विकार किया। सोमचंद ने सूरि के उपदेश से कोरटा में श्री पार्श्वनाथ भ. का तथा कुलदेवी बीसलमाता का मंदिर बनवाया। सवा मण सुवर्ण की शांतिनाथ भ. की प्रतिमा करायी उसपर हीरा माणेक जडीत छत्र कराया।

३. चार प्रकार के देवता, तिर्यंच और नारकी को दीर्घकालिकी संज्ञा होती है। विकलेन्द्रिय को हेतुवादोपदेशिकी संज्ञा होती है। सब स्थावर संज्ञारहित होते हैं। संज्ञा ३ हैं। हेतुवादोपदेशिक ② दिर्घकालिकी ③ दृष्टिवादोपदेशिकी मनुष्यों को दिर्घकालिकी संज्ञा होती है। कई सम्यक्तवी मनुष्यों को दृष्टिवादोपदेशिक संज्ञा भी होती है। मनवाले जिवों को दिर्घकालिकी संज्ञा, जो जिव सिर्फ वर्तमान का ही विचार करते हैं उनके पास हेतुवादोपदेशिकी संज्ञा, सम्यगदर्शन वाले जीवों की प्रत्येक क्रिया मोक्ष के लक्ष्यवाली होती है। ऐसे सम्यगदर्शनवाले श्रावक और साधुभगवंतो की दृष्टिवादोपदेशिकी संज्ञा होती है।

४. ध्यान करने तत्पर ध्याता ने अपने शुद्ध आत्मद्रव्य को एवं परमात्मद्रव्य को जान लिया है। परमात्म द्रव्य के पर्याय को अथवा उसके कोई भी एक गुण का निश्चय करके चिंतन करता है, इसी ध्यान को एकत्व कहते हैं।
अविचार – इस ध्यान में, वर्ण और अर्थ में कोई भी परिवर्तन नही है। इनमें ध्याता स्थिर रहता है। इसमें शब्द-शब्दांतर भी नही हैं ऐसा चिंतन अविचार कहलाता है। अविचार याने विचार रहित है। सवितर्क → याने वितर्क गुणयुक्त है। अपने शुद्ध परमात्म में भावश्रुत का आलंबन लेकर सूक्ष्म विचार का चिंतन करे इसे सवितर्क याने वितर्क (सहित) गुणोपेत शुक्लध्यान कहते हैं।

५. आज पंचमकाल में भी तैरना हो तो तैरा जा सकता है। और इसके आधार स्तंभ है जिनागम एवं जिनप्रतिमा। जिनप्रतिमा को हम जानते हैं। जगत के जिवों के कल्याण के खातिर देशना का झरना बहाते हैं ऐसी जिनवाणी का संग्रह वो ही जिनागम है। इसमें विश्व की रचना का विस्तार से वर्णन है। सुख दु:ख का स्वरूप उनके कारणों का विवेचन। प्रभुवाणी स्वरूप आगम की पहचान कर जीवन नौका को भवसागर पार करा सकते हैं। आगम न्यायमार्ग के अनुसरण करनेवाले सर्वथा शुद्ध हैं। मुक्तिमार्ग की आराधना में सहायक है। आगमों में कोई भी शंका को स्थान नहि है। निर्वाणरूपी नगर तक पहुंचाने का मार्गरूप